मिशन शिक्षण संवाद

विभिन्न विषयों पर आधारित रूचिपूर्ण, शैक्षिक एवं उपयोगी मधुर गीतों का संग्रह

गीतांजलि सृजन

माह- अप्रैल 2024

#9458278429

गीतकार -
जुगल किशोर त्रिपाठी (शि०मि०)
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

संकलन - मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन टीम

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5 विषय- प्रकृति
पाठ- 2 (मेरा परिवार, मेरी प्रेरणा)

415

तर्ज- स्वर्ग से सुन्दर, सपनों से प्यारा
गीत- खुशी-खुशी स्कूल से घर को..

खुशी-खुशी स्कूल से घर को,
लौट रही थी आज।
पर्यावरण संरक्षण पर था,
लेख मेरा शुभ काज।।
नानी को मैंने बताया,
भाई ने गिफ्ट दिलाया।।

रहती नानी उत्सुक, मेरे बारे में सुनती।
मिली प्रेरणा भाई से, जो भी होती गलती।।
नानी मेरे संग में रहती, करती घर का काज।।
नानी-------------------दिलाया।।

ऊँचा सुनती नानी, उम्र बहुत थी उनकी।
दिखता कम था, पापा खबर सुनाएँ मनकी।।
बड़ी उम्र में रचें व्यंजन, सबको उन पर नाज।
उन्हीं से माँ ने सीखा, खिलाती सबको तीखा।।

मेरे भैया कृशन सिखाते, थे संगीत सभी को।
बच्चे इज्जत करते, वे देते सीख सभी को।।
भ्रमणशील, बातूनी वह थे, नहीं किसी की लाज।
घूमकर आते जब भी, बताते थे वह सब भी।।
खुशी-खुशी स्कूल से.......आज।।

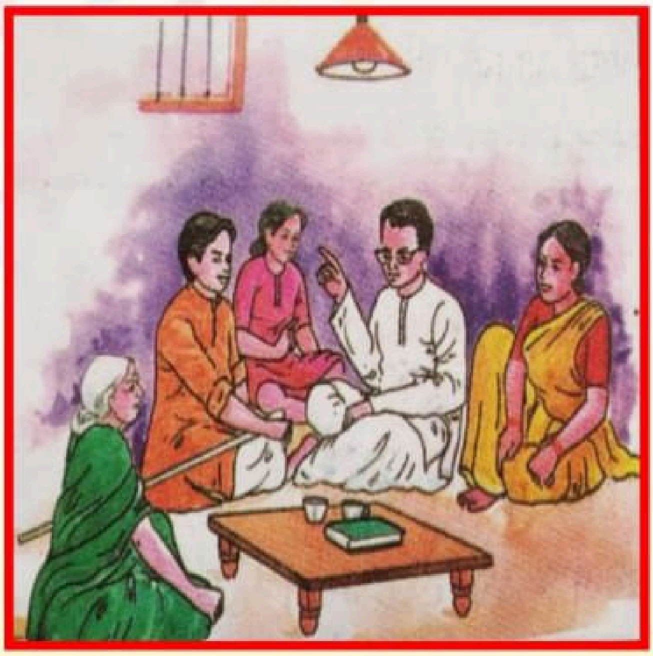

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

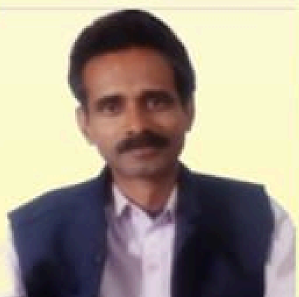

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति

पाठ- 2, मेरा परिवार, मेरी प्रेरणा (मेला)

416

तर्ज- बहुत प्यार करते हैं...

गीत- चलो मेला घूमें ओ सुनलो बहन

चलो मेला घूमें ओ सुनलो बहन।
बुला लो सभी को, जो हैं मित्रगण।।
चलो मेला घूमें...............बहन।

मेले में सब राज्य के लोग आयें,
अपनी अनोखी चीजें वे लाये।
घुमाऊँगा सबको, झूमेगा मन।।
चलो मेला घूमें..............बहन।

भैया ने सबको मेला घुमाया,
सबको बहुत कुछ खिलाया-पिलाया।
हुए खुश सभी हम, झूमा गगन।।
चलो मेला घूमें...........बहन।।

छः की जगह पाँच लोगों के पैसे,
लिए भेलपुरी के, लख भाई जैसे।
बता उसको दीन्हें ,रुपये तेही छण।।
चलो मेला घूमें..............बहन।।

ईमान अपना खोना नहीं है,
बतलाया भैया ने, ये ही सही है।।
पसन्द उसको करते, जिसमें हों ये गुण।।
चलो मेला घूमें.............बहन।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

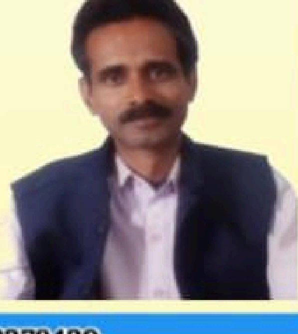

कक्षा- 5 विषय- प्रकृति

पाठ- 2 (मेरा परिवार, मेरी प्रेरणा)

तर्ज- आल्हा

गीत- फ्रांस देश का लुई ब्रेल था

417

ब्रेल लिपि

फ्रांस देश का लुई ब्रेल था,
तीन साल में पहुँचा आय।
तभी आँख में चोट लग गयी,
लगा नुकीला पत्थर जाय।।

आँखें खराब हो गयी उसकी,
दिखना बन्द हुआ तत्काल।
पढ़ने में अति रुचि थी उसकी,
सोचे मन तरकीब उपाय।।

सोच-समझकर आखिर उसने,
एक तरीका ढूँगा जाय।
ब्रेल लिपि के नाम से ये विधि,
जग में हो गयी जाहिर भाय।।

इस विधि में कागज पर उभरे,
बिंदु षठ छूकर पढ़े जाय।
नये-नये परिवर्तन अब तो,
हो गये पढ़ना सुगम उपाय।।

रचना

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति
पाठ- 3 (गौरव पुरस्कार)
तर्ज- हुई आँख नम और ये...
गीत- रखो स्वस्थ तन फिर हो मन..

418

गौरव पुरस्कार

रखो स्वस्थ तन फिर हो मन स्वस्थ काया।
व्यायाम अनिवार्य सबने बताया।।

तूने की है पढ़ाई न खेली कभी।
न व्यायाम कीन्हा, है रोती अभी।।
इसी से न इस वर्ष तव नाम आया।।
व्यायाम अनिवार्य सबने बताया।।

मधू जीती गौरव पुरस्कार बेटी।
ओ शादिमा क्यों उदासी में लेटी।।
हटाओ उदासी करो फिट ये काया।
व्यायाम अनिवार्य सबने बताया।।

वचन माँ के सुन शादिमा प्रश्न कीन्हें।
माँ ने उचित हल सभी के हैं दीन्हें।।
समझ शादिमा उर में निश्चय जमाया।।
कि व्यायाम अनिवार्य सबने बताया।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति
पाठ- 4 (आओ मिलकर खेलें खेल)
तर्ज- जीना है तो हँस के जियो..
गीत- अभ्यास कर करना व्यायाम तू

419

अभ्यास का महत्व

अभ्यास कर, करना व्यायाम तू,
तन-मन तेरा स्वस्थ होगा हाँ।
अभ्यास कर.............होगा हाँ।।

खेलोगे, कूदोगे, कर योग तू,
तन-मन प्रबल, सक्रियता होगी हाँ।
धीरज, समयबद्धता आयेगी,
अनुशासन, विनयशीलता होगी हाँ।।

कौशल व बारीकियाँ खेल की,
समझोगे मन त्रस्त होगा न।
अभ्यास कर............होगा हाँ।।

खेलों से मिलता है आनन्द हमें,
हर चीज का ज्ञान होता हमें।
सामाजिक समरसता बढ़ती सदा,
बहे दुःख फिर ज्ञान होता हमें।।

न हो दुःख में रख धैर्य, पाओगे तुम,
पुरस्कार गौरव ये होगा हाँ।।
अभ्यास कर............होगा हाँ।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

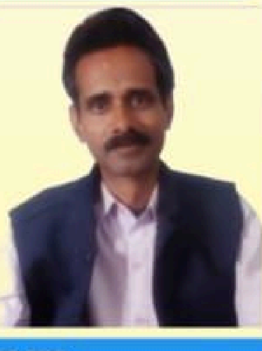

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति
पाठ- 5 (जीव-जन्तु की रोचक बातें)
तर्ज- प्यार काहे बनाया राम ने..
गीत- जग में प्राणी विविध रंग के...

420

जग के प्राणी

जग में प्राणी विविध रंग के।
आओ जानें इन्हें इनके ढ़ंग से।।

भिन्न रंग-ढंग न होते, पहिचान भी न होती,
भिन्न आकृति न होती तो शान भी न होती।
गन्ध, स्वाद भी न होता, स्पर्श गर न होता।
आवाज जो न होती, स्पष्ट कुछ न होता।।
जो भी जितने हैं उतने ढंग के।
जग में प्राणी विविध रंग के।।

ये जंगल में रहते, पशु-पक्षी हैं कहते।
ये गिरि, भू, नदी में हैं ऐसे सरकते।।
है मानव का घर, वे गुफाओं में रहते।
कोई बिल और कोटर व नीड़ों में रमते।।
आओ जानें इन्हें इनके संग से।
जग में प्राणी विविध रंग के।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

माह- अप्रैल 2024

421

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति

पाठ- 5 (जीव-जन्तु की रोचक बातें)

तर्ज- (भजन) जरा देर ठहरो राम...

गीत- रंग-रूप, आकार, बोली अलग हैं।

जग के प्राणी

रंग-रुप, आकार, बोली अलग हैं।
सभी जीवों के भिन्न गुण और पग हैं।।

आकार से हम जानें सहज ही,
पहचानें उनको हम देखते ही।
फलां जीव उस जीव से क्यों विलग है,
रंग-रुप, आकार, बोली अलग है।।

कुछ दूर तक देखें, कुछ सूँघते है,
कुछ तेज सुनते, कुछ कूदते हैं।
कुछ रात में सोवें, कुछ सोते दिवस हैं,
सभी जीवों के भिन्न गुण और पग हैं।।

चम-गादड़ व उल्लू सोते हैं दिन में,
खरगोश खतरों को भाँपें हैं मन में।
सूँघे-सुने कुत्ता ज्यों तेज मग है,
रंग-रुप, आकार, बोली अलग है।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति

पाठ- 6 (वन्य जीवों का संरक्षण)

422

तर्ज- साँवली सूरत पे मोहन

गीत- जीव-जन्तु प्रकृति के...

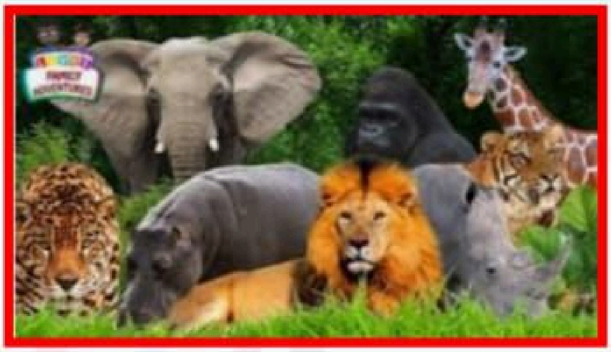

जीव-जन्तु प्रकृति के
अनुपम हमें उपहार हैं।
हम सदा निर्भर इन्हीं पर,
ये न हम पर भार हैं।।

बैल-खच्चर, ऊँट-घोड़ा,
काम में आते सभी।
खेत जोतें, भार ढ़ोते,
सवारी ढ़ोते सभी।।
गाय-बकरी, भेड़, भैंसें,
ये हमें उपहार हैं। हम सदा...

देती सभी ये दूध,
मुर्गी-बतख दे अण्डा सदा।
खाल-हड्डी मरे जीवों,
की सुलभ हमको सदा।।
पर्स, जूते, बटन, कंघे,
दें हमें उपहार हैं। हम सदा...

ऊँट-भेड़ अरु याक से,
ऊन मिलता है सदा।
सजावट की वस्तुएँ,
मिलती दुकानों पर हमें।।

है सदा उपकार इनका,
प्रकृति के उपहार हैं।
हम सदा निर्भर इन्हीं पर,
ये न हम पर भार हैं।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

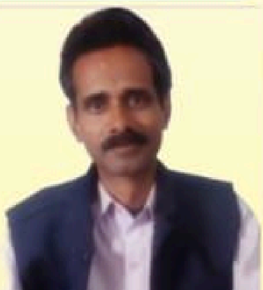

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति
पाठ- 5 (वन्य जीवों का संरक्षण)
तर्ज- राधे-राधे जपो चले आयेंगे बिहारी
गीत- रोपो पेड़-पौधे, होगी वर्षा सुहानी,

423

रोपो पेड़-पौधे होगी वर्षा सुहानी।
रोपो पेड़-पौधे होगी वर्षा सुहानी।। रोपो...

पहले पेड़-पौधे वन्य जीव भी बहुत थे,
जनता, जरुरतें बढ़ी हैं परेशानी।
रोपो पेड़-पौधे होगी वर्षा सुहानी।।

खेत हुए कम पड़ी भूमि की जरूरत,
काटा जंगलों को, की है सबने मनमानी।
रोपो पेड़-पौधे होगी वर्षा सुहानी।।

पेड़-पौधे हुए कम, वर्षा न होती,
होती, बाढ़ आती, आती भारी परेशानी।
रोपो पेड़-पौधे होगी वर्षा सुहानी।।

कारखाने, रेललाइन, रोड़, बाँध बनते,
जीव-जन्तु हुए घर नष्ट, ये कहानी।
रोपो पेड़-पौधे होगी वर्षा सुहानी।।

कटते पेड़, विलुप्त जीव

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति

पाठ- 7 (जंगल और जन-जीवन)

तर्ज- मेरे जागने से पहले भोर हो जाती है

424

गीत- ये तो जंगल हैं सबके........

ये तो जंगल हैं सबके,
सुनो आज प्राणी सभी, ये मन भाते हैं।
हैं स्वच्छ, सुन्दर, सुखद, भू-दिशा गाते है।।

जंगल में फल-फूल हैं पेड़-पौधे,
पक्षी चहकते हैं, जब बिजली कोंधे।
पशु-पक्षियों की हैं बोली अनोखी,
मन भाती औषधियाँ हैं सबने देखी।।
सब नाचते मगन हो, मन में न दु:ख,
कोई रह पाते हैं।।
हैं स्वच्छ................ भू-दिशा गाते है।।

औषधियाँ, लकड़ी हम जंगल से लाते।।
फर्नीचर बनते बहुत काम आते।।
देखो इन्हें तुम न काटो हमेशा,
ये हैं तो हम हैं, ये देते सन्देशा।।
नभ-मण्डल में देते, ऑक्सीजन बढ़ा ये,
प्राणी हरषाते हैं।
है स्वच्छ................ भू-दिशा गाते है।।

जंगल का महत्व

जंगल हमारे कार्बन को सोखें,
रोकें ये भू के कटाव को देखें।
हरते दु:खद गैस वर्षा कराते,
फल-फूल, औषधियाँ, लकड़ी हम पाते।।
इनसे जाता है कच्चा, माल फैक्ट्री में,
वस्तुएँ पाते हैं।।
है स्वच्छ..................... भू-दिशा गाते है।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

425

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति
पाठ- 7 (जंगल और जन-जीवन)
तर्ज- तारा है सारा जमाना, श्याम हमको भी तारो
गीत- कहानी बहुत ही पुरानी, मानव सभ्यता की

मानव सभ्यता (भाग- 1)

कहानी बहुत ही पुरानी, मानव सभ्यता की।-2

पहले का मानव था जंगल में रहता,
नदियों का पीता था पानी, मानव सभ्यता की।
कहानी बहुत ही पुरानी, मानव सभ्यता की।।

चलता ज्यों चहुँ पैर, जैसे हो बन्दर।
फिर धीरे से बदली कहानी, मानव सभ्यता की।
कहानी बहुत ही पुरानी, मानव सभ्यता की।।

दो पैरों पर होकर सीधा खड़ा वह,
चलता, यों बदली कहानी, मानव सभ्यता की।
कहानी बहुत ही पुरानी, मानव सभ्यता की।।

मस्तिष्क, हाथों का उपयोग करके,
कई काम करने की ठानी, मानव सभ्यता की।
कहानी बहुत ही पुरानी, मानव सभ्यता की।।

न घर थे रहते खुले व्योम नीचे,
गुफा वास था खतरे जानी, मानव सभ्यता की।
कहानी बहुत ही पुरानी, मानव सभ्यता की।।

फिर उसने पत्थर के हथियार ढ़ाले,
फल-माँस का पीता पानी, मानव सभ्यता की।
कहानी वहुत ही पुरानी, मानव सभ्यता की।।

पशु-वृक्ष छालें व पत्ते पहनता,
थी दुविधा भरी ये कहानी, मानव सभ्यता की।
कहानी बहुत ही पुरानी, मानव सभ्यता की।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

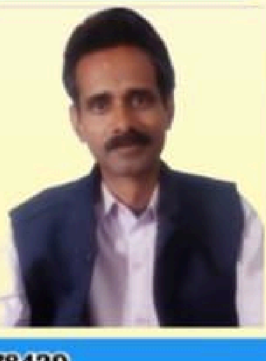

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति

पाठ- 7 (जंगल और जन-जीवन)

तर्ज- दिलों में सज रहे ऐसे, मेरे बाँके बिहारीजी

गीत- मिली है आग कैसे के....

426

मानव सभ्यता (भाग- 2)

मिली है आग कैसे के,
कहूँ इसकी कहानी मैं।
सुरक्षित कब हुआ मानव,
हुआ मानव था ज्ञानी मैं।।

चली कहुँ तेज अति आँधी,
हिली तरु डालें रगड़ी थीं।
रगड़ आपस में होने से,
उठी चिंगारी जानी मैं।। मिली है..

कभी पाषाण से कर चोट,
पाषाणों पे कर देखा।
उठी चिंगारी लख झूमे,
अहा! मिली आग जानी मैं।। मिली है..

पड़ी जब घास-पत्तों पे,
लगी तब आग, पशु भागे।
जले कुछ माँस के टुकड़े,
लगे स्वादिष्ट खाने में।। मिली है..

बड़ी उपलब्धि मानव की,
हुई है आस सब मन की।
शीत, पशु से हुई रक्षा,
कही तुमसे कहानी मैं।। मिली है..

रचना

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

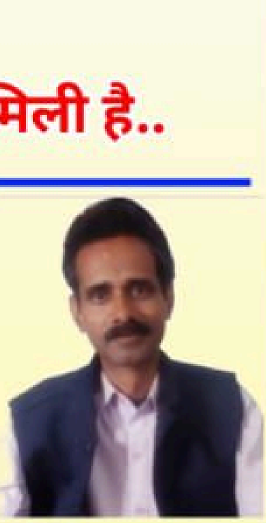

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति
पाठ- 7 (जंगल और जन-जीवन)
तर्ज- चलते-चलते हँसी वादियों में..
गीत- रहते थे आदिवासी वनों में....

427

जंगल और आदिवासी

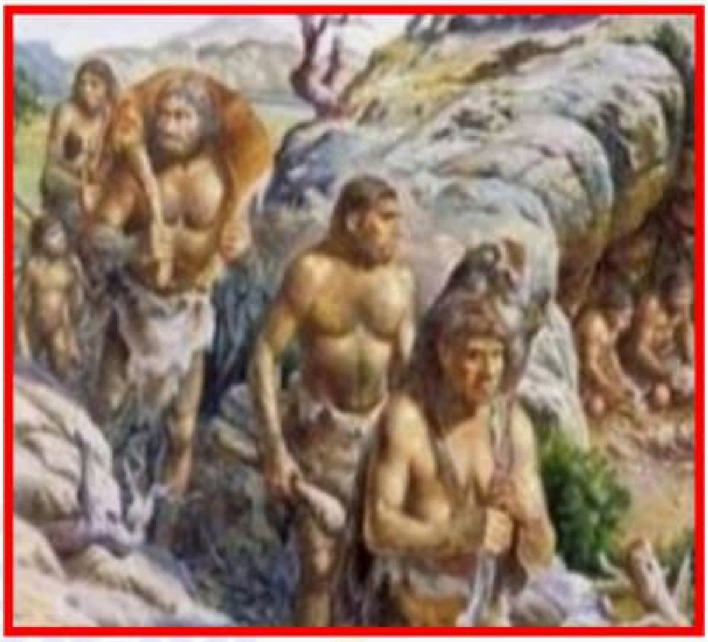

रहते थे आदिवासी वनों में,
पहले निर्भर थे जंगल में सारे।
करते थे ये जरुरत की सारीं,
वस्तुएँ प्राप्त जंगल से सारे।।

डलिया, चटाई, ढ़ोल, टोकरी बनाते,
जड़ी-बूटी, पत्तल व वंशी को लाते।
बाजार, गाँवों में बेचते सदा ये,
जंगल के रखवाले रहते सदा ये।।
रहते हैं आदिवासी..............

जंगल ही उनका सब-कुछ सदा था,
जंगल की चीजों पे हक उनका ही था।
जंगल सदा वे बचाते रहे रे,
पंचायत अपनी बनाते रहे रे।।
रहते थे आदिवासी.........

वन अधिकार कानून उनको मिला,
सन् सात में पाया ये हक भला।
संस्कृति-कला को बचाते ये सारे,
कटे आज जंगल दुबिधा में प्यारे।।
रहते थे आदिवासी वनों में.......

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति
पाठ- 8 (भोज्य पदार्थों का संरक्षण)
तर्ज- बहुत प्यार करते हैं तुमको...
गीत- भोजन खुली, नम जगहों पे भाई

428

भोज्य पदार्थों का बचाव

भोजन खुली, नम जगहों पे भाई।
न रखना कभी तुम, हो बेकार भाई।।

लगें धूल, मक्खीं, फफूंदी बहुत से,
जीवाणु पनपें, हो दूर रस से।
फफूंदी व जीवाणु सड़ा देते भाई,
न रखना कभी तुम हो, बेकार भाई।।

गर्मी, नमी में ये दोनों पनपते,
हों पोषक सभी नष्ट, सभी ऐसा कहते।
विज्ञान सम्मत ये, कहती हैं माई,
न रखना कभी तुम बेकार भाई।।

जो हैं खाद्य चीजें, जतन से रखो तुम,
उनकी सदा तुम, सुरक्षा करो तुम।।
न बर्बाद पैसा हो, ये रखना सदा हीं,
न रखना कभी तुम, बेकार भाई।।
भोजन खुली, नम जगहों पे भाई।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति
पाठ- 8 (भोज्य पदार्थों का संरक्षण)
तर्ज- बहुत प्यार करते हैं तुमको...

429

गीत- भोजन खुली, नम जगहों पे भाई

भोज्य पदारथ रक्षित कीजे।
जीवन स्वास्थ्य लाभ तुम लीजे।।

संरक्षण के उपाय

सूरज की किरणों में रखकर,
भोज्य पदार्थ सुखाओ जाकर।
सब्जी हरी और आटे व फल को,
फ्रिज में रखो दूध अरु दही को।।
संरक्षित ऐसे इन्हें कीजे।
जीवन स्वास्थ्य लाभ तुम लीजे।।

पानी, दूध उबाल के पीजे,
नसें जीवाणु न चिन्ता लीजे।
नींबू, आम, आँवला, इमली,
बना अचार और तुम चटनी।।
मिर्च, करेला को रख लीजे।
जीवन स्वास्थ्य लाभ तुम लीजे।।

चीनी, नमक, तेल, मैथी संग,
रखें रहें ये वर्षों ये ढ़ंग।
अपनाओ औरों को बताओ,
निज संग सबको लाभ कराओ।।
मुफ्त ज्ञान ये सबको दीजे।
जीवन स्वास्थ्य लाभ तुम लीजे।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति

पाठ- 9 (हम और हमारी फसलें)

तर्ज- हुई आँख नम और ये दिल........

गीत- करे खूब मेहनत सभी को खिलाये

430

किसान और खेती

करे खूब मेहनत सभी को खिलाये।
है ये अन्नदाता फसलों को उगाये।।

कड़ी करता मेहनत, धरा संग खेले,
अनाज, सब्जियाँ, फल व पौधे उगा ले।-2
वही है परेशान जग जिससे पाये,
है ये अन्नदाता, फसलों को उगाये।।

पौधे कैसे हरे हों, बढ़े बाढ़ इनकी,
उपज चौगनी हो, खाद से बीज उनकी।
है करता सुरक्षा डटे पग जमाये,
है ये अन्नदाता, फसलों को उगाये।।

करे तीन फसलों को सींचे सदा ही,
रहे मस्त गा गीत, उर में सदा ही।
फसल की निदाई करे रोज जाये,
है ये अन्नदाता, फसलों को उगाये।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

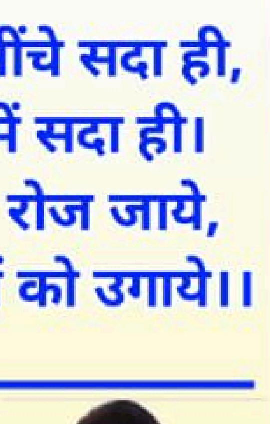

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- अप्रैल 2024

431

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति
पाठ- 9 (हम और हमारी फसलें)
तर्ज- फूल तुम्हें भेजा है खत में....
गीत- होती नयी सिंचाई आया.....

किसान और खेती

होती नयी सिंचाई, आया,
ड्रिप, स्प्रिंगकलर भाई।
बूँद-बूँद से पौधों की जड़,
पर जाये, ज्यों बरसा आई।।

सब्जी, फूल-फलों की होती,
टपक सिंचाई ड्रिप द्वारा।
गेहूँ, मटर, चना, मसरी की,
हो स्प्रिंगकलर द्वारा।।

उपज बढ़ायेंगे हम भाई,
नया बीज, दें जैविक खाद।
कम वर्षा, सूखे मैदानों,
में ये बिधि भरती आह्लाद।।
होती नयी सिंचाई, आया...

पानी की हो वचत, हो अच्छी,
फसल सिंचाई, उपज बढ़े।
है बलूई मिट्टी में ये अति,
उपयोगी अति फसल बढ़े।।

करें खाद उपयोग खेत में,
बने खेत उपजाऊ हो।
गोबर अरु कम्पोस्ट नीम का,
इससे फसल कमाऊ हो।।
होती नयी सिंचाई, आया.....

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति

पाठ- 9 (हम और हमारी फसलें)

तर्ज- मेरे अपने कर्म, तेरे सर की कसम

गीत- पानी देकर बुवाई करोगे अगर

432

किसान और खेती

पानी देकर बुवाई करोगे अगर,
खुद कहोगे कि सचमुच बहुत पा लिया।
लाओगे जो नया बीज को बोओगे,
फिर नहीं तुम दिखाओगे रवि को दिया।।

बौनी से पूर्व बीजों का उपचार कर,
और उपचार कर खाद दो फिर सदा।
जो फसल सूखे तो डालना तुम दवा,
होंगे सब स्वस्थ तरु, तुमसे सब कह दिया।
पानी देकर..................पा लिया।।

फिरते कीट अरु पतंगे व जो लोग हैं
नष्ट करती अगर कीटनाशक दिया।
पेड़ हों स्वस्थ, सुन्दर, सुघड़ देखकर,
मन मयूरा मेरा मन मगन हो लिया।।
पानी देकर...............पा लिया।

कटाई मड़ई व ओसई कर,
जब पके ये फसल जिसने ये कर दिया।
धूप में रख सुखा, रखकर अच्छी जगह,
समझो वह ही सफल, उसने सब जी लिया।
पानी देकर.....................पा लिया।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति
पाठ- 10 (पेड़-पौधों का भोजन)
तर्ज- आल्हा छन्द

433

गीत- भोजन करना, खेल खेलना...

स्वपोषी-परपोषी

भोजन करना, खेल खेलना,
दैनिक कार्य, अन्य गृह काम।
सभी कार्य के लिए ऊर्जा,
मिले प्रकृति से हमें तमाम।।

सभी कार्य के लिए ऊर्जा,
मिलती भोजन से दो ध्यान।
पौधे अपना स्वयं बनाते,
भोजन सूर्य किरण दरम्यान।।

मनुज, जीव-जन्तु निर्भर हैं,
पौधों पर भोजन के हेतु।
सारे जग को ये देते हैं,
भोजन, सब्जी, फल के सेतु।।

जो भोजन निज स्वयं बनाते,
स्वपोषी वे कहलाते।
परजीवी हैं अन्य सभी जो,
आश्रित पौधों से खाते।।

परजीवी-सहजीवी जो हैं,
मृत-उपजीवी, कीट-पतंग।
ये परपोषी कहलाते हैं,
इनके अलग-अलग रंग-ढ़ंग।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति
पाठ- 10 (पेड़-पौधों का भोजन)
तर्ज- ये जीवन जितनी बार मिले...
गीत- मानव व जीव-जन्तु जो हैं...

434

स्वपोषी-परपोषी

मानव व जीव-जन्तु जो हैं।
निर्भर पौधों पर सदा रहें।। मानव..

चावल, दालें, आलू, तिलहन,
गेहूँ, औषधि, फल और सुमन।
देते हमको ऋतु मार सहें,
निर्भर पौधों पर सदा रहें।।

पौधे-पेड़ स्वयं भोजन,
पाते बसुधा, वायु से छन।
माध्यम हैं विविध ये रंग भरें,
निर्भर पौधों पर सदा रहें।।

पौधों का हरा भाग होता,
क्लोरोफिल सूर्य किरण लेता।
जल, लवण, सी ओ टू साथ करें,
निर्भर पौधों पर सदा रहें।।

परजीवी-सहजीवी जो हैं,
मृत-उपजीवी, कीट-पतंग।
ये परपोषी कहलाते हैं,
इनके अलग-अलग रंग-ढ़ंग।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति

पाठ- 10 (पेड़-पौधों का भोजन)

तर्ज- ये जीवन जितनी बार मिले...

गीत- मानव व जीव-जन्तु जो हैं...

435

मृतजीवी-परपोषी

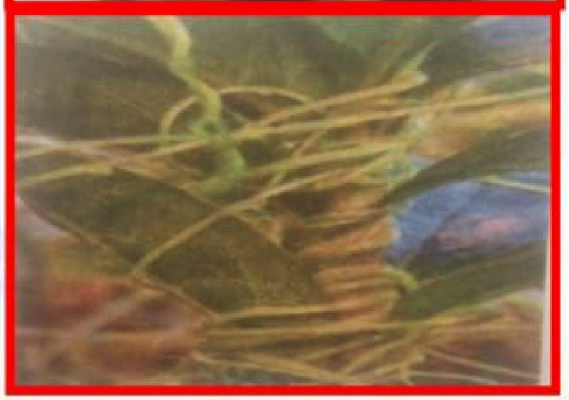

कुकुरमुत्ता मृतजीवी तुमको बताऊँ,
न इनमें क्लोरोफिल, न ही पत्तीं सुनाऊँ।
अपना भोजन नहीं ये बनाता स्वयं है,
मृत, सड़े-गले पदार्थों खाते बताऊँ।।

कुछ हैं परजीवी जैसे अमरबेल है,
पौधों-जन्तु पर निर्भर रहें बेल है।
ये परपोषी, परजीवी बतलाके गाऊँ,
कुकुरमुत्ता मृतजीवी तुमको बताऊँ।।

कुछ हैं पौधे तुम्हारे अगल अरु बगल में,
जो रहते हैं लिपटे विटप से पहल मैं।
करुँ उनकी, तुमसे मैं खोजू गिनाऊँ,
कुकुरमुत्ता मृतजीवी तुमको बताऊँ।।

कुछ पतंगों व कीटों को खाते पकड़कर,
हैं ये पौधे बेहद चतुर होते भू पर।
जहाँ दलदली भूमि, तालाब ठाऊँ,
विचित्र इनके पत्ते, ये आश्चर्य पाऊँ।। कुकुर..

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति
पाठ- 10 (पेड़-पौधों का भोजन)
तर्ज- ये जीवन जितनी बार मिले...
गीत- मानव व जीव-जन्तु जो हैं...

436

हैं कुछ पौधों के चपटे पात,
होते हैं नुकीले वे।
हैं दो हिस्से जुड़े हैं बीच से,
हों बन्द चाहें वे।।

जो बैठे कीट कोई उन पर,
वे हिस्से बन्द हों खिंचकर।
पतंगे कैद हो उनमें,
न बाहर आ भी पाते वे।।
हैं कुछ पौधों के चपटे....

निकलता पत्तियों से रस,
गला देता उन्हें कर कस।
पचाते पौधे हैं उनको,
रहें लाचार, वेवश वे।।
हैं कुछ पौधों के चपटे...

घटपर्णी का पौधा

घड़े सा आगे का आकार,
ऊपर पात ढक्कन जार।
मधुर रस में फिसलकर कीट,
ढ़क्कन बन्द हो यों वे।।
हैं कुछ पौधों के चपटे...

ये है घटपर्णी का पौधा,
लगे मीठा, सरस सोंधा।
बनाते जो, नहीं जो भी,
कहा, भोजन करें जो वे।।
हैं कुछ पौधों के चपटे...

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

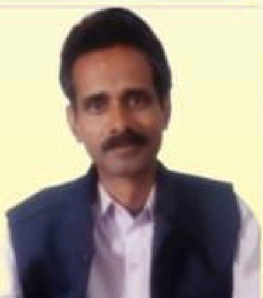

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

437

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति
पाठ- 11 (हम और हमारे घर)
तर्ज- तारा है सारा जमाना...

गीत- मुझमें रहता है सारा जमाना...

मुझमें रहता है सारा जमाना।
रक्षा करता हूँ सबकी।।

मैं घर हूँ

सारा समय तुम रहते हो मुझमें,
वर्षा, सर्दी व गर्मी से सबकी।
रक्षा करता है सबकी,
मुझमें रहता है सारा जमाना।।...

बनाते मुझे हैं अनुकूल जगह पे,
ध्यान, पूजा करें उसमें रब की।
रक्षा करता हूँ सबकी,
मुझमें है सारा जमाना।।...

भिन्न-भिन्न ढ़ंगों से मुझको बनाते,
सुरक्षा से रख ध्यान निज की।
रक्षा करता हूँ सबकी,
मुझमें रहता है सारा जमाना।।...

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

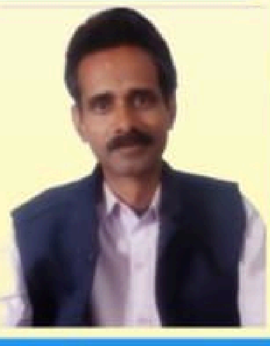

मिशन शिक्षण संवाद **गीतांजलि सृजन**

माह- अप्रैल 2024

438

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति

पाठ- 11 (हम और हमारे घर)

तर्ज- राधे-राधे जपो चले आयेंगे बिहारी..

गीत- कुछ होते पक्के कुछ कच्चे घर होते...

कच्चे-पक्के घर

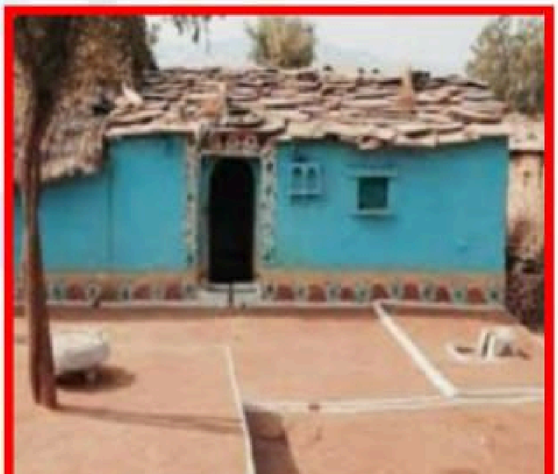

कुछ एक मन्जिला, कुछ दो मन्जिल बनते,
कहीं बहु मन्जिला मकान खूब होते।
कुछ होते पक्के, कुछ कच्चे घर होते।।...

यहाँ आकार कुछ और कहीं और दिखते,
घर के स्वरूप में भी कई ढ़ंग होते।
कुछ होते पक्के कुछ कच्चे घर होते।।...

कहीं बाँस, वर्फ और पाषाढ़ घर हैं,
तैरते हुए हैं घर, लकड़ी के होते।
कुछ होते पक्के, कुछ कच्चे घर होते।।...

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

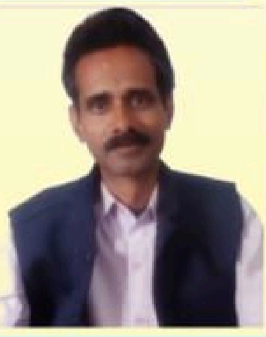

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति

पाठ- 11 (हम और हमारे घर)

तर्ज- हुई आँख नम और ये...

गीत- पानी बरसता, बहुत गर्मी पड़ती...

439

अमेजन के जंगलों में घर

पानी बरसता, बहुत गर्मी पड़ती,
अमेजन के जंगलों में मुश्किल हैं।
उमस भारी पड़ती, कठिन जिन्दगी है,
अमेजन के जंगलों में मुश्किलें हैं।।

ताड़ की पत्तियों को टिका खम्भ से,
ये बनाते हैं घर यों ही आरम्भ से।
बड़ी गोल छत फिर भी हों अटकलें हैं,
अमेजन के जंगलों में मुश्किलें हैं।।

इनमें होती न दीवारें, होता खुला,
बीच से इनका छत, भी यों खुला।
चलो हम भी उस ओर लखने चलें हैं,
अमेजन के जंगलों में मुश्किलें हैं।।

ये हैं दीवार बिन, नम हैं रहते सदा,
सुखद, गर्मी, वर्षा की भफकन न हाँ है।
रहते यों लोग हो जैसा मौसम ढ़लें हैं,
अमेजन के जंगलों में मुश्किलें हैं।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- अप्रैल 2024

440

कक्षा- 5, विषय- प्रकृति
पाठ- 12 (आपदाएँ और उनसे वचाव)
तर्ज- मिलते-मिलते हँसी वादियों में...
गीत- आपदाएँ तों आतीं बहुत हैं...

आपदा (अचानक विपदा)

आपदाएँ तो आतीं बहुत हैं,
हों अधिक ये तो कैसे लड़ोगे?
होगी बरसात, सर्दी जो ज्यादा,
हो अगर गर्मी कैसे बचोगे? आपदाएँ...

आपदा अचानक का संकट है आता,
लगे अस्त जीवन समझ में न आता।
होता जीवन प्रभावित, बड़ी हानि होती,
मुश्किलें हैं बड़ी जिन्दगी जैसे खोती।।
आपदाएँ तो आतीं बहुत हैं...

तूफान, भूकम्प, बाढ़ों का खतरा,
दुर्घटना सड़क की, न जिसपे पहरा।
सूखा, लू, आँधी, बादल फटा है,
लगे आग वन में, भू-स्खलन हो।।
आपदाएँ तो आतीं बहुत हैं...

बादल का फटना ढ़ाता कहर है,
ज्वालामुखी फटते, उगता जहर है।
दंगा, अपराध, विस्फोट होते सुनोगे,
पढ़ो न्यूज तुम रोज की, जान लोगे।।
आपदाएँ तो आतीं बहुत हैं...

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।